भा.कृ.अ.प. -केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान

द्वारा जारी की गई

पटसन एवं समवर्गीय रेशा उगाने वाले किसानों को कृषि-सलाह सेवाएं

(16 मई – 25 मई, 2020) (निर्गत सं : 07 / 2020)

भा.कृ.अ.प. -केन्द्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान
ICAR-Central Research Institute for Jute and Allied Fibers
(एक आई. एस. ओ. 9001:2015 प्रमाणित संस्थान)
बैरकपुर , कोलकाता -700120, पश्चिम बंगाल
www.crijaf.org.in

पटसन एवं समवर्गीय रेशा उगाने वाले किसानों को कृषि-सलाह सेवाएं (16 मई – 25 मई , 2020)

I. पटसन एवं समवर्गीय रेशा उगाने वाले राज्यों में अगले सप्ताह मौसम की संभावना

राज्य / कृषि जलवायु क्षेत्र / क्षेत्र	मौसम का पूर्वानुमान
पश्चिम बंगाल का गांगेय क्षेत्र (मुर्शिदाबाद, नदिया, हुगली, हावड़ा, उत्तर 24 परगना, पूर्व वर्धमान, पश्चिम वर्धमान, दक्षिण 24-परगना, बांकुरा, बीरभूम)	19 मई को हल्की से मध्यम बारिश / गर्जन के साथ बौछारें (11 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 33-39 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 22-26 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।
पश्चिम बंगाल के उप-हिमालयी क्षेत्र (कूचबिहार, अलीपुरद्वार, जलपाईगुड़ी, उत्तर दिनाजपुर, दक्षिण दिनाजपुर और मालदा)	अगले चार दिनों में हल्की से मध्यम बारिश / गर्जन के साथ बौछारें (109 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान लगभग 28-36 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान लगभग 18-26 डिग्री सेल्सियस होने की संभावना है। मालदा और दक्षिण दिनाजपुर में अधिकतम तापमान 36-39 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 26-27 डिग्री सेल्सियस होगा। यहाँ हल्की बारिश (10 मिमी तक) की संभावना है।
असम : मध्य ब्रह्मपुत्र घाटी क्षेत्र (मारीगाँव, नागांव)	अगले चार दिनों में हल्की से मध्यम बारिश / गर्जन के साथ बौछारें (61 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 31-33 डिग्री सेल्सियस, न्यूनतम तापमान 21-22 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।
असम : निचला ब्रह्मपुत्र घाटी क्षेत्र (गोआलपारा, धुबरी, कोकराझार, बंगाईगाँव, बारपेटा, नलबाड़ी, कामरूप, बक्सा, चिरांग)	अगले चार दिनों में मध्यम से भारी बारिश / गर्जन के साथ बौछारें (157 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 29-32 डिग्री सेल्सियस, न्यूनतम तापमान 20-24 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।
बिहार : कृषि जलवायु क्षेत्र II (उत्तरी पूर्व, (पूर्णिया, कटिहार, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया , अररिया , किशनगंज)	अगले चार दिनों में हल्की से मध्यम बारिश (56 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 32-40 डिग्री सेल्सियस, न्यूनतम तापमान 21-27 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।
ओडिशा : उत्तर पूर्वी तटीय मैदान (बालेश्वर, भद्रक, जाजपुर)	19 मई को मध्यम से भारी बारिश / गर्जन के साथ बौछारें (54 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 29-36 डिग्री सेल्सियस, न्यूनतम तापमान 22-26 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।
ओडिशा: उत्तर पूर्व और दक्षिण पूर्वी तटीय मैदान क्षेत्र: केंद्रपाड़ा, खुर्दा, जगतसिंघपुर, पूरी, नयागढ़, कटक और गंजम के हिस्से	19 मई को मध्यम से भारी बारिश / गर्जन के साथ बौछारें (127 मिमी तक) की उम्मीद है। अधिकतम तापमान 29-36 डिग्री सेल्सियस, न्यूनतम तापमान 21-26 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है।

स्रोत : IMD (https://mausam.imd.gov.in/) और www.weather.com

कॉपीराइट © भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ), बैरकपुर

II. पटसन कृषकों के लिए कृषि सलाह

1. समय पर 25 मार्च -10 अप्रैल) के बीच बोया गया पटसन फसल (फसल अवधि: 50-60 दिन)

- *नॉरवेस्टर* / चक्रवात के कारण हुए अत्यधिक वर्षा के कारण ज़मीन में जल भराव की समस्या हो सकती है जो फसल की वृद्धि पर बुरा असर डाल सकता है। इसलिए पटसन खेत से अतिरिक्त जल की निकासी के लिए,तुरत, खेत में ढलान की ओर प्रत्येक 10 मी के अंतराल पर 20 सेंमी चौड़ी और 20 सेंमी गहरी नाली बनाएँ। प्रति वर्ग मीटर में 55-60 पौधे को बनाए रखें ।
- साधारणतया वर्षा के बाद 30-50 दिनों के पटसन के बंद कोमल पत्ते भूरे घुन द्वारा संक्रमित हो सकते हैं जो पौधे के वृद्धि के साथ और बढ़ जाता है। गहरे सफेद धब्बों वाले भूरा घुन (ग्रे वीविल) कीट को बढ़ते हुए पर्णसमूह पर देखा जाता है। क्लोरपायरीफॉस 50EC + साइपरमेथ्रिन 5EC संयोजन @ 1-1.5 मिली / ली या क्लोरपायरीफॉस 20EC @ 2 मि.ली. / ली या क्विनालफॉस 25 ईसी@1.25 मिली / ली का संयोजित छिड़काव करें।
- वर्षा के बाद,रोयेंदार कैटरपिलर (hairy caterpillar)के संक्रमण के बारे में किसानों को सतर्क रहना चाहिए क्योंकि तब तापमान के साथ आर्द्रता भी बढ़ जाता है। पत्तियों की सतह के नीचे इनके पीले हरे रंग के अंडे और युवा लार्वा गुच्छों में दिखाई देते हैं। यह कीट बहुत जल्दी फैलता है और पत्तियों को नुकसान पहुंचाता है। प्रारम्भिक आक्रमण को देखने या रोकने के लिए अपने खेत कि नियमित निगरानी करें। गुच्छों में निकले अंडों के समूह और नव उभरे लार्वा को तुरंत हटाएँ । अत्यधिक संक्रमण के मामलों में लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5EC @ 1मिली / ली या इंडोक्साकार्ब 14.5 SC @ 1मिली / ली का छिड़काव करें।
- अगर सूखे की अवधि बनी रहती है तो मकड़ी का आक्रमण होता है जिसमें युवा पत्तियों के अंतःशिरा में मोटापन और सिकुड़न जैसा दिखाई देता है जो बाद में कॉपर-ब्राउन हो जाते हैं। इससे बचने के लिए ज़मीन को पानी से सिंचित रखकर सूखे से बचना है और मिट्टी की नमी को बनाए रखना है । फेनपाइरोक्सीमेट 5 EC @ 1.5 मिली / लीटर या स्पिरोमेसीफेन 240 SC @ 0.7 मिली / लीटर या प्रोपरगाइट 57 EC @ 2.5 मिली / लीटर का फोलियर स्प्रे 10 दिनों के अंतराल पर बारी-बारी से करें अगर ये संक्रमण 10 दिनों से अधिक समय तक लगा रहता है। बारिश होने की स्थिति में, अगर लक्षण शुरू हो जाएं या बना हैं, तो अकेरीसाइड का छिड़काव शुरू करने के लिए कम से कम 5-6 दिनों तक प्रतीक्षा करें।
- सेमिलूपर कीट लगभग सभी पटसन उगाये जाने वाले क्षेत्रों में पाया जाता है और पर्ण क्षति पहुंचाता है। हल्के पीले सिर के साथ पतला, हरा लार्वा,जिनमें संकीर्ण गहरे हरे रंग की पृष्ठीय रेखाएं आसानी से देखी जाती हैं जब वे बीच में एक लूप बनाके उसमें रेंगते हैं। पचास से अस्सी दिनों की फसल इसके प्रति अतिसंवेदनशील होती है। क्षति हमेशा पौधे के ऊपरी हिस्से में अधखुले पत्तियों से शुरू होता है जो की सबसे संवेदनशील हिस्सा होता है। इसका नुकसान फसल के नौ खुले पत्तों तक ही सीमित होता है। शीर्ष स्थित पत्तियां तिरछे रूप से कटी होती है जबकि कोमल पत्तियों के किनारों को खाया जाता है, और वे दाँतेदार हो जाते हैं। ये कभी-कभी क्षतिग्रस्त तनों से प्रशाखा (ब्रांचिंग) निकलने को प्रेरित करता है। जब भी सेमीलॉपर द्वारा क्षति 15% तक पहंचती है, तो कोई भी संपर्क कीटनाशक जैसे कि प्रोफेनोफॉस 50 EC @ 2 मिली/लीटर, फेनावलरेट 20 EC @ 1.0 मिली/लीटर या साइपरमेथ्रिन 25 EC @ 0.5 मिली/लीटर का प्रयोग किया जा सकता है। कीटनाशक का छिड़काव हमेशा पौधे के शीर्षस्थ भाग में किए जाने की आवश्यकता है ना कि पूरे पौधे पर।

समय पर बोया गया (50-60 दिन) फसल

क्लोरपायरीफॉस 50EC + साइपरमेथ्रिन 5EC संयोजन @ 1-1.5 मिली / ली या क्लोरपायरीफॉस 20EC @ 2 मि.ली. / ली या क्विनालफॉस 25 ईसी@1.25 मिली / ली का संयोजित छिड़काव कर भूरे घुन का नियंत्रण करें

कॉपीराइट © भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ), बैरकपुर

वर्षा के बाद, उच्च तापमान व आर्द्रता के कारण रोयेंदार कैटरपिलर (hairy caterpillar) का संक्रमण । यह कीट बहुत जल्दी फैलता है और पत्तियों को नुकसान पहुंचाता है। प्रारम्भिक आक्रमण को देखने या रोकने के लिए अपने खेत कि नियमित निगरानी करें। गुच्छों में निकले अंडों के समूह और नव उभरे लार्वा को तुरंत हटाएँ । अत्यधिक संक्रमण के मामलों में लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5EC @ 1मिली / ली या इंडोक्साकार्ब 14.5 SC @ 1मिली / ली का छिड़काव करें।

जब भी सेमीलॉपर द्वारा क्षति 15% तक पहुंचती है, तो कोई भी संपर्क कीटनाशक जैसे कि प्रोफेनोफॉस 50 EC @ 2 मिली/लीटर, फेनावलरेट 20 EC @ 1.0 मिली/लीटर या साइपरमेथ्रिन 25 EC @ 0.5 मिली/लीटर का प्रयोग किया जा सकता है। कीटनाशक का छिड़काव हमेशा पौधे के शीर्षस्थ भाग में किए जाने की आवश्यकता है ना कि पूरे पौधे पर।

अ) मकड़ी संक्रमित 30-35 दिनों की फसल
ब) मिट्टी की नमी बनाकर सूखे से बचाएं और फेनपाइरोक्सीमेट 5 EC @ 1.5 मिली / लीटर या स्पिरोमेसीफेन 240 SC @ 0.7 मिली / लीटर या प्रोपरगाइट 57 EC @ 2.5 मिली / लीटर का फोलियर स्प्रे 10 दिनों के अंतराल पर बारी-बारी से करें

जल जमाव से प्रभावित फसल. सतही चैनल बनाकर अतिरिक्त जल की निकासी करें

शिलावृष्टी से फसल नुकसान। अगर नुकसान 50 – 60 % से ज्यादा हो तो दुबारा बुवाई करनी चाहिए , अनयथा अन्तः सस्य प्रक्रिया द्वारा जमीन की स्थिति को ठीक करना चाहिए।

कॉपीराइट © भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ), बैरकपुर

2. 15 अप्रैल के बाद पटसन की बुवाई (फसल अवधि : 30-40 दिन)

- 20 किलोग्राम / हेक्टेयर की दर से नत्रजन का अंतिम ऊपरी छिड़काव तब करें जब भूमि में पर्याप्त नमी हो और प्रति वर्ग मीटर में 50-55 पौधे को बनाए रखें ।
- नॉरवेस्टर / चक्रवात के कारण हुए अत्यधिक वर्षा के कारण ज़मीन में जल भराव की समस्या हो सकती है जो फसल की वृद्धि पर बुरा असर डाल सकता है। इसलिए पटसन खेत से अतिरिक्त जल की निकासी के लिए,तुरंत, खेत में ढलान की ओर प्रत्येक 10 मी के अंतराल पर 20 सेंमी चौड़ी और 20 सेंमी गहरी नाली बनाएँ।
- साधारणतया वर्षा के बाद 30-50 दिनों के पटसन के बंद कोमल पत्ते भूरे घुन द्वारा संक्रमित हो सकते हैं जो पौधे के वृद्धि के साथ और बढ़ जाता है। गहरे सफेद धब्बों वाले भूरा घुन (ग्रे वीविल) कीट को बढ़ते हुए पर्णसमूह पर देखा जाता है। क्लोरपायरीफॉस 50EC + साइपरमेथ्रिन 5EC संयोजन @ 1-1.5 मिली / ली या क्लोरपायरीफॉस 20EC @ 2 मि.ली. / ली या क्विनालफॉस 25 ईसी@1.25 मिली / ली का संयोजित छिड़काव करें।
- वर्षा के बाद,रोयेंदार कैटरपिलर (hairy caterpillar)के संक्रमण के बारे में किसानों को सतर्क रहना चाहिए क्योंकि तब तापमान के साथ आर्द्रता भी बढ़ जाता है। पत्तियों की सतह के नीचे इनके पीले हरे रंग के अंडे और युवा लार्वा गुच्छों में दिखाई देते हैं। यह कीट बहुत जल्दी फैलता है और पत्तियों को नुकसान पहुंचाता है। प्रारम्भिक आक्रमण को देखने या रोकने के लिए अपने खेत कि नियमित निगरानी करें। गुच्छों में निकले अंडों के समूह और नव उभरे लार्वा को तुरंत हटाएँ । अत्यधिक संक्रमण के मामलों में लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5EC @ 1मिली / ली या इंडोक्साकार्ब 14.5 SC @ 1मिली / ली का छिड़काव करें।
- तीस से पैंतीस दिन के फसल अवधि में माइट कीट का आक्रमण होता है जिसमें युवा पत्तियों के अंतःशिरा में मोटापन और सिकुड़न जैसा दिखाई देता है जो बाद में कॉपर-ब्राउन हो जाते हैं। इससे बचने के लिए ज़मीन को पानी से सिंचित रखकर सूखे से बचना है और मिट्टी की नमी को बनाए रखना है।फेनपाइरोक्सीमेट 5 EC @ 1.5 मिली / लीटर या स्पिरोमेसीफेन 240 SC @ 0.7 मिली / लीटर या प्रोपरगाइट 57 EC @ 2.5 मिली / लीटर का फोलियर स्प्रे 10 दिनों के अंतराल पर बारी-बारी से करें अगर ये संक्रमण 10 दिनों से अधिक समय तक लगा रहता है। बारिश होने की स्थिति में, अगर लक्षण शुरू हो जाएं या बना हैं, तो अकेरीसाइड का छिड़काव शुरू करने के लिए कम से कम 5-6 दिनों तक प्रतीक्षा करें।
- किसानों को इंडिगो कैटरपिलर कीट के आक्रमण से सतर्क रहने की सलाह दी जाती है । इंडिगो कैटरपिलर के नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 EC @ 2 मिली./ लीटर का छिड़काव संध्या में किया जाना चाहिए ।

उत्तर व दक्षिण बंगाल के विभिन्न जगहों पर 35-40 दिनों की फसल

वर्षा के बाद, उच्च तापमान व आर्द्रता के कारण रोयेंदार कैटरपिलर (hairy caterpillar) का संक्रमण । यह कीट बहुत जल्दी फैलता है और पत्तियों को नुकसान पहुंचाता है। प्रारम्भिक आक्रमण को देखने या रोकने के लिए अपने खेत कि नियमित निगरानी करें। गुच्छों में निकले अंडों के समूह और नव उभरे लार्वा को तुरंत हटाएँ । अत्यधिक संक्रमण के मामलों में लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5EC @ 1मिली / ली या इंडोक्साकार्ब 14.5 SC @ 1मिली / ली का छिड़काव करें।

क्लोरपायरीफॉस 50EC + साइपरमेथ्रिन 5EC संयोजन @ 1-1.5 मिली / ली या क्लोरपायरीफॉस 20EC @ 2 मि.ली. / ली या क्विनालफॉस 25 ईसी@1.25 मिली / ली का संयोजित छिड़काव कर भूरे घुन का नियंत्रण करें

कॉपीराइट © भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ), बैरकपुर

अ) मकड़ी संक्रमित 30-35 दिनों की फसल

ब) मिट्टी की नमी बनाकर सूखे से बचाएं और फेनपाइरोक्सीमेट 5 EC @ 1.5 मिली / लीटर या स्पिरोमेसीफेन 240 SC @ 0.7 मिली / लीटर या प्रोपरगाइट 57 EC @ 2.5 मिली / लीटर का फोलियर स्प्रे 10 दिनों के अंतराल पर बारी-बारी से करें

शिलावृष्टी से फसल नुकसान। अगर नुकसान 50 – 60 % से ज्यादा हो तो दुबारा बुवाई करनी चाहिए , अनयथा अन्तः सस्य प्रक्रिया द्वारा जमीन की स्थिति को ठीक करना चाहिए।

जल जमाव से प्रभावित फसल. सतही चैनल बनाकर अतिरिक्त जल की निकासी करें

3. 20 अप्रैल के बाद पटसन की बुवाई (फसल अवधि : 20-30 दिन)

- जिन्होने अप्रैल के प्रथम सप्ताह में बुवाई की है (3 सप्ताह पौध अवस्था) वो एक हल्की सिंचाई दें और उसके 2-3 दिनों के बाद, मिट्टी के नमी को देखकर, नेल वीडर या सिंगल व्हील वीडर द्वारा निराई- गुराई कर लें। थीनिंग द्वारा, प्रति वर्ग मीटर में 50-55 पौधे को ही रखना है। अति सूखे की स्थिति में एक हल्की सिंचाई (3 सेमी) देकर 20 किग्रा / हेक्टेयर की दर से नत्रजन का द्वितीय डोज़ का ऊपरी छिड़काव तब करें
- बुवाई के 20 दिनों के बाद निराई –गुराई और पौधों को पतला करने के पश्चात, कम उर्वरता वाली भूमि में 27 किलोग्राम / हेक्टेयर तथा उच्च उर्वरता वाली भूमि में 20 किलोग्राम / हेक्टेयर की दर से नत्रजन का छिड़काव करें।
- नॉरवेस्टर / चक्रवात के कारण हुए अत्यधिक वर्षा के कारण ज़मीन में जल भराव की समस्या हो सकती है जो फसल की वृद्धि पर बुरा असर डाल सकता है। इसलिए पटसन खेत से अतिरिक्त जल की निकासी के लिए,तुरंत, खेत में ढलान की ओर प्रत्येक 10 मी के अंतराल पर 20 सेंमी चौड़ी और 20 सेंमी गहरी नाली बनाएँ।
- साधारणतया वर्षा के बाद 30-50 दिनों के पटसन के बंद कोमल पत्ते भूरे घुन द्वारा संक्रमित हो सकते हैं जो पौधे के वृद्धि के साथ और बढ़ जाता है। गहरे सफेद धब्बों वाले भूरा घुन (ग्रे वीविल) कीट को बढ़ते हुए पर्णसमूह पर देखा जाता है। क्लोरपायरीफॉस 50EC + साइपरमेथ्रिन 5EC संयोजन @ 1-1.5 मिली / ली या क्लोरपायरीफॉस 20EC @ 2 मि.ली. / ली या क्विनालफॉस 25 ईसी@1.25 मिली / ली का संयोजित छिड़काव करें।
- तीस से पैंतीस दिन के फसल अवधि में माइट कीट का आक्रमण होता है जिसमें युवा पत्तियों के अंतःशिरा में मोटापन और सिकुड़न जैसा दिखाई देता है जो बाद में कॉपर-ब्राउन हो जाते हैं। इससे बचने के लिए ज़मीन को पानी से सिंचित रखकर सूखे से बचना है और मिट्टी की नमी को बनाए रखना है । फेनपाइरोक्सीमेट 5 EC @ 1.5 मिली / लीटर या स्पिरोमेसीफेन 240 SC @ 0.7 मिली / लीटर या प्रोपरगाइट 57 EC @ 2.5 मिली / लीटर का फोलियर स्प्रे 10 दिनों के अंतराल पर बारी-बारी से करें अगर ये संक्रमण 10 दिनों से अधिक समय तक लगा रहता है। बारिश होने की स्थिति में, अगर लक्षण शुरू हो जाएं या बना हैं, तो अकेरीसाइड का छिड़काव शुरू करने के लिए कम से कम 5-6 दिनों तक प्रतीक्षा करें।
- किसानों को इंडिगो कैटरपिलर कीट के आक्रमण से सतर्क रहने की सलाह दी जाती है । इंडिगो कैटरपिलर के नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 EC @ 2 मिली॰/ लीटर का छिड़काव संध्या में किया जाना चाहिए ।

उत्तर व दक्षिण बंगाल के विभिन्न जगहों पर 30 दिनों की फसल

कॉपीराइट © भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ), बैरकपुर

अ) मकड़ी संक्रमित 30-35 दिनों की फसल
ब) मिट्टी की नमी बनाकर सूखे से बचाएं और फेनपाइरोक्सीमेट 5 EC @1.5 मिली / लीटर या स्पिरोमेसीफेन 240 SC @0.7 मिली / लीटर या प्रोपरगाइट 57 EC @2.5 मिली / लीटर का फोलियर स्प्रे 10 दिनों के अंतराल पर बारी-बारी से करें

इंडिगो कैटरपिलर के नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 मिली @ 2 मिली / ली का छिड़काव संध्या में किया जाना चाहिए । यदि समस्या बनी रहती है, तो इसे 8 - 10 दिनों के अंतराल पर दोहराएं।

सूखे मिट्टी की दशा में राई जक्टोनिया या मक्रोफ़ोमिना कवक द्वारा कॉलर रौट रोग होने की संभावना रहती है। अगर संक्रमण 5 % से ज्यादा हो तो कौपर ऑक्सिक्लोराइड (ब्लाईटोक्स) 50 WP @0.5 % घोल का प्रयोग करें ।

जल जमाव से प्रभावित फसल. सतही चैनल बनाकर अतिरिक्त जल की निकासी करें

4. अप्रैल के अंतिम सप्ताह में बोया गया पटसन (फसल अवधि : 15-25 दिन)

- बुवाई के 15-20 दिनों के बाद नेल वीडर के स्क्रैपर या सिंगल व्हील वीडर का व्यवहार कर खरपतवार को हटाएँ। भारी बारिश के स्थिति में, नेल वीडर का व्यवहार नहीं हो सकता है,ऐसी स्थिति में खरपतवार के नियंत्रण के लिए क्विजालोफोप इथाइल 5 EC @ 1.5- 2 मिली / लीटर का छिड़काव करें साथ ही एक हाथ निराई कर बाकी खरपतवार का भी नाश करें।
- अति सूखे की स्थिति में एक हल्की सिंचाई (3 सेमी) दें। अत्यधिक वर्षा के कारण ज़मीन में जल भराव की समस्या हो सकती है जो फसल की वृद्धि पर बुरा असर डाल सकता है। इसलिए पटसन खेत से अतिरिक्त जल की निकासी के लिए,तुरंत, खेत में ढलान की ओर प्रत्येक 10 मी के अंतराल पर 20 सेंमी चौड़ी और 20 सेंमी गहरी नाली बनाएँ।
- अंतिम निराई-गुड़ाई के पश्चात, जो की बुवाई के 20 दिनों के बाद 20 किलोग्राम / हेक्टेयर की दर से नत्रजन का प्रथम ऊपरी छिड़काव करें ।
- किसानों को इंडिगो कैटरपिलर कीट के आक्रमण से सतर्क रहने की सलाह दी जाती है । इंडिगो कैटरपिलर के नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 EC @ 2 मिली./ लीटर का छिड़काव संध्या में किया जाना चाहिए।
- सूखे मिट्टी की दशा में राई जक्टोनिया या मक्रोफ़ोमिना कवक द्वारा कॉलर रौट रोग होने की संभावना रहती है। अगर संक्रमण 5 प्रतिशत से ज्यादा हो तो कौपर ऑक्सिक्लोराइड(ब्लाईटोक्स) 50 WP @ 0.5 % घोल का प्रयोग करें अथवा मेंकोज़ेब @ 0.2% का संरक्षित छिड़काव कर सीडलिंग ब्लाईट को नियंत्रित करने की सलाह दी जाती है।

बुवाई के 20-21 दिनों के बाद नेल वीडर के स्क्रैपर का व्यवहार करें

बुवाई के 20-21 दिनों के बाद सिंगल व्हील वीडर का व्यवहार करें

कॉपीराइट © भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ), बैरकपुर

इंडिगो कैटरपिलर के नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 मिली @ 2 मिली / ली का छिड़काव संध्या में किया जाना चाहिए । यदि समस्या बनी रहती है, तो इसे 8 - 10 दिनों के अंतराल पर दोहराएं।

सूखे मिट्टी की दशा में कवक द्वारा कॉलर रौट रोग होने की संभावना रहती है। अगर संक्रमण 5 % से ज्यादा हो तो कौपर ऑ क्सिक्लोराइड (ब्लाईटोक्स) 50 WP @ 0.5% घोल का प्रयोग करें

जल जमाव से प्रभावित फसल. सतही चैनल बनाकर अतिरिक्त जल की निकासी करें

5. मई के प्रथम सप्ताह में बोया गया पटसन (फसल अवधि : 10-15 दिन)

- जूट की बुवाई के बाद जो घासीय खरपतवार निकलती है उसके नियंत्रण के लिए, बुवाई के 15-20 दिन बाद, क्विजालोफोप इथाइल 5 EC @ 1.5- 2.0 मिली / लीटर का छिड़काव करें। साथ ही एक हाथ निराई कर खरपतवार को नष्ट करें
- पटसन खेत से अतिरिक्त जल की निकासी के लिए,तुरंत, खेत में ढलान की ओर प्रत्येक 10 मी के अंतराल पर 20 सेंमी चौड़ी और 20 सेंमी गहरी नाली बनाएँ।
- सूखे मिट्टी की अवस्था में कॉलर रौट का संक्रमण हो सकता है, अगर संक्रमण 5% से ज्यादा हो तो, कौपर ओक्सिक्लोराइड (ब्लाईटोक्स 50 WP) @ 0.5 % घोल का प्रयोग करें एवं खेत की सिंचाई करें । हालाँकि, भारी बारिश के स्थिति में, पहले खेत से अतिरिक्त जल की निकासी करें उसके बाद कौपर ओक्सिक्लोराइड(ब्लाईटोक्स 50 WP) @ 0.5 % अथवा मेंकोज़ेब @ 0.2% का संरक्षित छिड़काव कर सीडलिंग ब्लाईट को नियंत्रित करने की सलाह दी जाती है।

जल जमाव से प्रभावित फसल. सतही चैनल बनाकर अतिरिक्त जल की निकासी करें

बुवाई के 10 दिनों के बाद नेल वीडर या सिंगल व्हील वीडर का व्यवहार कर खरपतवार को हटाएँ या क्विजालोफोप इथाइल 5 EC @ 1 मिली / लीटर का छिड़काव करें।

कॉपीराइट © भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ), बैरकपुर

III. समवर्गीय रेशों के लिए कृषि सलाह

अ) सीसल

- जिन किसानों ने अभी तक सीसल के पत्तों की कटाई नहीं की है वे दोपहर के समय पत्तों की कटाई और अगर सर्वोच्च तापमान 40 डिग्री से ज्यादा नहीं है तो उसी दिन निष्कर्षण की प्रक्रिया पूरी कर लेनी चाहिए। सीसल कि पत्तियों को काटने के बाद उसमें रोग संक्रमण से बचाव के लिए कॉपर औक्सी क्लोराइड @ 2-3 ग्रा / ली का छिड़काव करें
- प्राथमिक नर्सरी में खरपतवार नियंत्रण एवं पौध संरक्षण पर ध्यान देने पर ही रोपण सामाग्री का सही विकास होगा ताकि जुलाई के माह में उनका स्थानांतरण माध्यमिक नर्सरी में किया जा सके ।
- क्षेत्र का निर्धारण, सफाई एवं एक घन फूट के गड्ढे को 3.5 मी+ 1 मी X 1 मी par बनाना ताकि सीसल की रोपाई दविपंक्तीय विधि से हो सके। परंतु पूरे फील्ड में खुदाई नहीं करनी चाहिए क्योंकि इससे बिना वनस्पति वाले भूमि में भू क्षरण की संभावना बढ़ जाती है।
- दो पंक्तीय रोपाई वाले सीसल में लगाए गए अंतरवरतीय फसल का रखरखाव और नए फसल को लगाने के लिए जमीन भी तैयार करना है ताकि अतिरिक्त आय प्राप्त हो सके। अंतरवरतीय फसल के रूप में दलहन, सब्जी और चारा फसल सबसे अधिक उपयुक्त है।.
- ज़ेब्रा रोग के प्रकट होने पर मेंकोजेब 64 % + मेटाक्सिल 8 % @ 2.5 ग्रा / ली और कौपर औकसीक्लोराइड @ 3.0 ग्रा / ली पानी के साथ प्राथमिक और मुख्य खेत में छिड़काव करना चाहिए।

(अ) पत्तियों की कटाई

(ब) रेशा निष्कर्षण

प्राथमिक नर्सरी में अन्तः सस्य प्रक्रिया

सीसल में ज़ेब्रा रोग कौपर औकसीक्लोराइड @ 2-3 ग्रा / ली पानी के साथ छिड़काव

सीसल के साथ चीकू का अंतरवरतीय फसल

सीसल के साथ लौकी का अंतरवरतीय फसल

सीसल के साथ चारा का अंतरवरतीय फसल

कॉपीराइट © भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ), बैरकपुर

ब) रेमी

- जिन किसानों ने अभी तक रोपण नहीं की है वो कृपया रेमी की आर 1411 (हज़ारिका) किस्म के कन्द / प्लांटलेट्स की रोपाई तुरंत पूरी कर लें।
- 4-5 सेंटीमीटर गहरी जुताई और एक पंक्ति से दूसरी पंक्ति की दूरी 60-75 सेमी रखें । 10-15 सेंटीमीटर लंबाई के कन्द / प्लांटलेट / स्टेम कटिंग के टुकड़ों को 30 सेंटीमीटर की दूरी पर कुंड में लगाया जाना चाहिए।
- जिन किसानों ने मार्च के द्वितीय सप्ताह तक रोपण पूरी कर ली है वो प्रति हेक्टेयर 20:10:10 किलोग्राम एन: पी: के॰ का प्रयोग करें।
- मिट्टी की अच्छी सेहत और रेमी के संतुलित पोषण के लिए जैविक खाद (20-25% तक खेत की खाद या रेमी कम्पोस्ट) और रासायनिक उर्वरक का समेकित प्रयोग करना चाहिए|
- बुवाई के 20 दिनों के अंदर और साथ ही प्रत्येक कटाई के बाद क्विज़ालोफोप का छिड़काव 5% EC @ 40 ग्राम a.i. प्रति हेक्टर करने से सभी घासीय खरपतवारों को कम किया जा सकता है।
- पुराने रेमी के पौधों एक समान ऊंचाई में रखने के लिए स्टेज बैक (stage back) प्रक्रिया की सिफारिश की जाती है।
- असम की मौसम पूर्वानुमान के अनुसार मध्यम से भारी बारिश / गरज के साथ बौछारें पड़ने की संभावना है। रेमी की फसल जलभराव के प्रति बहुत अधिक संवेदनशील है, इसलिए भारी बारिश के दौरान खेत को अच्छी तरह से सूखा होना चाहिए।

रेमी रोपण के लिए प्रकन्द की कटाई

अच्छे से तैयार किए गए भूमि में कुंड विधि द्वारा रेमी रोपण

पुराने रेमी के पौधों एक समान ऊंचाई में रखने के लिए स्टेज बैक (stage back) की प्रक्रिया

कॉपीराइट © भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ), बैरकपुर

स) सनई

1. ऐसे किसान जिन्होंने अभी तक सनई की बुआई नहीं की है

- अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमशः 38-41 डिग्री सेल्सियस और 25-26 डिग्री सेल्सियस होने की संभावना है, और अगले एक सप्ताह के दौरान उत्तर प्रदेश के सनई क्षेत्रों में नगण्य वर्षा होने की संभावना है।
- किसानों को सलाह दी जाती है कि वे बुवाई से पहले की सिंचाई के साथ भूमि की तैयारी और सनई की बुआई करें और सनई की उन्नत किस्मों जैसे कि प्राकर (जे आर जे 610), अंकुर (SUIN 037), शैलेश (एस एच -4), स्वस्तिक (SUIN 053) और के -12 (ब्लैक) की प्रमाणित किस्मों को कार्बेण्डजीम @ 2 ग्रा / किलोग्राम के साथ बीजोपचार उपरांत ही बुवाई करनी चाहिए।
- बुवाई के लिए N: P_2O_5: K_2O :: 20: 40-50: 40 किग्रा / हेक्टेयर (यूरिया: SSP: MOP @ 20: 312.5: 66.7 kg / h) की दर से दिया जाना चाहिए है और अंतिम जुताई के साथ मिट्टी में अच्छी तरह मिलाया जाना चाहिए। पचीस प्रतिशत पोशाक तत्वों की आपूर्ति खेत सड़ित खाद (FYM) से होनी चाहिए।
- रोपाई के समय पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 सेंटीमीटर, पौधे से पौधे की दूरी 5-7 सेंटीमीटर और गहराई पर 2-3 सेंटीमीटर होनी चाहिए । यदि पंक्ति मे बुवाई करनी है तो बीज दर 25 किलोग्राम / हेक्टेयर और यदि छिड़ककर बुवाई करनी है तो बीज दर 35 किलोग्राम / हेक्टेयर रखने की सलाह दी जाती है।

काले रंग की बीज

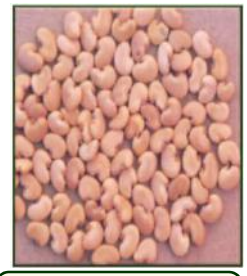

पीले रंग की बीज

भूमि तैयारी और बीजोपचार उपरांत बुवाई

2. जिन किसानों ने मध्य अप्रैल तक सनई की बुआई पूरी कर ली है (फसल अवधि: 30-35 दिन)

- यदि बुवाई के 35 दिनों के बाद बारिश नहीं होती है या सूखा रहता है तो, एक हल्की सिंचाई दी जानी चाहिए। प्रति वर्ग मीटर 55-60 पौधे को रखना है।
- अगर सूखे की स्थिति बनी रहे तो फ़्ली बीटल का संक्रमण हो सकता है जो पत्तों को खाकर उसमे छोटे - छोटे छेद बनाते हैं। किसानों को रोयेंदार केटरपिल्लर के प्रति सतर्क रहने की सलाह दी जाती है और अगर संक्रामण ज्यादा लगे तो कलोरपाइरीफोस 20EC @ 2 मिली /ली या कोई नीम आधारित फोर्मूलेशन @ 3-4 मिली/ली का प्रयोग करें।

30- 40 दिनों की सनई फसल

फ़्ली बीटल द्वारा संक्रमित फसल

रोयेंदार केटरपिल्लर द्वारा संक्रमित फसल

कॉपीराइट © भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ), बैरकपुर

3. जिन किसानों ने 20 अप्रैल तक सनई की बुआई पूरी कर ली है (फसल अवधि: 25-30 दिन)

- बुवाई के 25 दिनों के बाद, अगर सूखे की स्थिति बनी रहे तो, एक हल्की सिंचाई दी जानी चाहिए। उसके बाद स्क्रेपर/ व्हील हो / हाथ निराई कर खरपतवार नियंत्रण एवं थीनिंग कर प्रति वर्ग मीटर 55-60 पौधे को रखना है।
- अगर सूखे की स्थिति बनी रहे तो फ़्ली बीटल का संक्रमण हो सकता है जो पत्तों को खाकर उसमे छोटे - छोटे छेद बनाते हैं। किसानों को रोयेंदार केटरपिल्लर के प्रति सतर्क रहने की सलाह दी जाती है और अगर संक्रामण ज्यादा लगे तो कलोरपाइरीफोस 20EC @ 2 मिली /ली या कोई नीम आधारित फोर्मूलेशन @ 3-4 मिली/ली का प्रयोग करें।

25 – 30 दिनों की सनई फसल

फ़्ली बीटल द्वारा संक्रमित फसल

4. जिन किसानों ने अप्रैल के अंत तक सनई की बुआई पूरी कर ली है (फसल अवधि: 15-25 दिन)

- बुवाई के 15-20 दिनों के बाद एक हल्की सिंचाई दी जानी चाहिए। उसके बाद स्क्रेपर/ व्हील हो / हाथ निराई कर खरपतवार नियंत्रण एवं थीनिंग कर प्रति वर्ग मीटर 55-60 पौधे को रखना है।
- अगर सूखे की स्थिति बनी रहे तो लीफ हौपर का संक्रमण देखा जाता है जो पत्तियों से रस चूस के पौध को कमजोर बना देता है। इसलिए एक हल्की सिंचाई दी जानी चाहिए।
- किसानों को स्टेम गर्डलर के संक्रमण पर सतर्क रहने की सलाह दी जाती है। संक्रमण की स्थिति में, क्लोरपायरीफॉस 20 ईसी @ 2 मिली / ली का छिड़काव करना चाहिए |

व्हील हो द्वारा खरपतवार नियंत्रण और मिट्टी पल्वीकरन

रोयेंदार केटरपिल्लर द्वारा संक्रमित फसल

5. जिन किसानों ने मई के प्रथम सप्ताह तक सनई की बुआई पूरी कर ली है (फसल अवधि: 10-15 दिन)

- बुवाई के 15 दिनों के बाद सिंचाई नाली और निकासी नाली तैयार कर लेना चाहिए। स्क्रेपर/ व्हील हो / हाथ निराई कर खरपतवार नियंत्रण और मिट्टी पल्वीकरन कर लेना चाहिए।
- किसानों को स्टेम गर्डलर के संक्रमण पर सतर्क रहने की सलाह दी जाती है। संक्रमण की स्थिति में, क्लोरपायरीफॉस 20 ईसी @ 2 मिली / ली का छिड़काव करना चाहिए |

बुवाई के 15 दिनों के बाद सिंचाई नाली और निकासी नाली तैयार करता एवं निराई करता किसान

कॉपीराइट © भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ), बैरकपुर

IV. कोविड -19 वायरस के प्रसार को रोकने के लिए सुरक्षा के उपाय एवं अन्य आवश्यक कदम

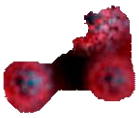

1) किसानों और हितधारकों (stakeholders) को सलाह दी जाती है कि वे अपने नियमित स्वास्थ्य निगरानी के लिए अपने मोबाइल में आरोग्य सेतु एप्प अपलोड करें और पास के कोविड -19 रोगियों का आंकलन करें ।
2) किसानों को क्षेत्र संचालन की पूरी प्रक्रिया में हर कदम पर सामाजिक दूरी बनाना, साबुन से हाथ धोना, चेहरे पर नकाब पहनना, साफ सुथरे कपड़े पहनकर व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखना, इन सभी सुरक्षा उपायों का पालन करना है।
3) यदि संभव हो सके तो हाथ से बुवाई करने की बजाय क्रिजैफ सीड ड्रिल का उपयोग करें जहाँ भी संभव हो फील्ड ऑपरेशनों को कम से कम करें और एक ही दिन में बुवाई और भूमि की तैयारी के लिए अधिक संख्या में लोगों को न बुलाएँ ।
4) यदि मशीनों को किसान समूहों द्वारा साझा और उपयोग किया जाता है तो सभी मशीनों जैसे कि सीड ड्रिल, नेल वीडर, सिंचाई पंप, खेत जुताई उपकरण, ट्रैक्टर आदि की उचित स्वच्छता और सफाई बनाए रखें । मशीन के पुर्जों को भी बार-बार साबुन से धोएँ।
5) विश्राम के दौरान 3-4 फीट की सुरक्षित दूरी एक दूसरे से बनाए रखें, घर पर ही बीज उपचार, खाद और उर्वरकों की लोडिंग / अनलोडिंग ये सभी काम करें।
6) किसी भी संदिग्ध या संभावित वाहक के प्रवेश से बचने के लिए ज्यादा से ज्यादा अपने जान-पहचान वालों से ही क्षेत्र की मोनिटोरिंग इत्यादि का काम लें ।
7) अपने जानने वाली दुकान से ही बीज, उर्वरक, कीटनाशक इत्यादि खरीदा करें और बाजार से लौटने के बाद तुरंत अपने हाथ और शरीर के उजागर भागों को अच्छी तरह साबुन से धोयें । बीज खरीदने के लिए बाजार जाते समय हमेशा फेस मास्क का प्रयोग करें।
8) अपने मोबाइल में आरोग्य सेतु एप्प अपलोड करें और कोविड - 19 संबंधित जरूरी स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जाने।

Aarogya Setu
मैं सुरक्षित | हम सुरक्षित | भारत सुरक्षित

कॉपीराइट © भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ), बैरकपुर

V. जूट मिल श्रमिकों के लिए सलाह

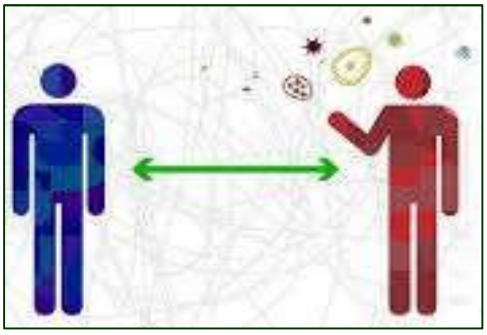

- मिलों को चलाने के लिए, मिलों के भीतर रहने वाले श्रमिक में से ही छोटे -छोटे अवधि की कई शिफ्टों में लगाया जा सकता है।
- सामान्य रूप से मिलों के अंदर पर्याप्त संख्या में वाशिंग पॉइंट दिए जाने चाहिए ताकि श्रमिक बार बार हाथ धो सकें। काम करने के दौरान कार्यकर्ता धूम्रपान न करें।
- वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए अधिक से अधिक बार शौचालय को साफ करना चाहिए।
- श्रमिकों को यह भी सलाह दी जाती है कि वे मिल में काम करते समय दस्ताने, फेस मास्क, जूते, उचित सुरक्षात्मक कपड़ों का उपयोग करें।
- मिल के अंदर, कार्य करने वाले क्षेत्रों को बार बार बदला जाना चाहिए ताकि कर्मियों के बीच सामाजिक दूरी आवश्यकता के अनुसार बनाए रखी जा सके एवं वायरस के संक्रमण को दबाया जा सके|
- जो श्रमिक बार बार काम करने वाली सतहों के संपर्क में आते हैं, वे ज्यादातर समय मशीनों के महत्वपूर्ण भागों को छूते और उन्हे संभालते हैं जैसे स्विच, लीवर आदि उन्हे अपने हाथ की सफाई और साबुन से हाथ धोने में अतिरिक्त सावधानी बरतनी चाहिए। इसके अलावा, इस तरह की सतहों और मशीन भागों से संक्रमित वायरस को हटाने के लिए साबुन के पानी से साफ किया जाना चाहिए।
- उच्च जोखिम वाले वृद्ध श्रमिकों को मिल परिसर के अंदर पृथक स्थानों पर काम करने की अनुमति दी जानी चाहिए ताकि दूसरों के संपर्क में आने की संभावना काफी हद तक कम हो जाए।
- मिल श्रमिकों को टिफिन / दोपहर के भोजन के दौरान इकट्ठा होने से बचना चाहिए, दो व्यक्तियों के बीच कम से कम **6-8** फीट की दूरी बनाए रखनी चाहिए और भोजन लेने से पहले अपने हाथों को अच्छी तरह से धोना चाहिए।
- **COVID** संक्रमण से संबंधित किसी भी प्रकार के लक्षणों के मामले में श्रमिकों को तुरंत डॉक्टर या मिल मालिकों को सूचित करना चाहिए

आपके स्वस्थ और सुरक्षित होने की कामना करते हैं

डॉ. गौरांग कर
निदेशक
भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ)
नीलगंज, बैरकपुर
कोलकाता- 700120 ,पश्चिम बंगाल

द्वारा संकलित एवं प्रकाशित

Acknowledgement: The Institute acknowledges the contribution of Chairman and Members of the Committee of Agro-advisory Services, Heads of Crop Production, Crop Improvement and Crop Protection division, In-charges of AINPAJ and Extension section and other contributors of their division/section, In-charges of Regional Research Stations of ICAR-CRIJAF and their team, In-charge AKMU of ICAR-CRIJAF and his team for preparing this Agro-advisory (Issue No: 07/2020)

कॉपीराइट © भा.कृ.अ.प. - सी.आर.आई.जे.ए.एफ. (क्रिजैफ), बैरकपुर